फ़िलहाल, मुवाफ़िक़ इरशादि मुदर्रिसि हिन्दी ख़ुदावंदि निअ्मत जनाब कपतान जिमिस मेाअट साहिब (दाम इक़बालहु) के, तारिणीचरण मित्र ने, छापे के वास्ते, संस्कृत और भाषा के अलफ़ाज़ को, जो रेख़ते के मुहावरे में कम आते हैं, निकालकर मुरव्वज अलफ़ाज़ को दाख़िल किया. मगर बअ्ज़े लफ़्ज़ हिंदुओं का, जिस के निकालने से ख़लल जाना, बहाल रखा. उम्मेद है कि हुस्नि क़बूल पावे.

बैतालपच्चीसी

मुक़द्दमः कहानीका.

धारा नगर नाम एक शहर. वहां का राजा गन्धर्वसेन. उस की चार रानियां थीं. उन से छः बेटे थे. एक से एक पण्डित और ज़ोरावर था. क़ज़ाकार बअ्द चन्द-रोज़ के वह राजा मरगया; और उस की जगह बड़ा बेटा शङ्क(१) नाम राजा हुआ. फिर कितने दिनों के पीछे, उसका छोटा भाई बिक्रम,(२) बड़े भाई को मारकर, आप राजा हुआ; और बख़ूबी राज करने लगा. दिन बदिन उसका राज ऐसा बढ़ा, कि तमाम जम्बुद्वीपका राजा हुआ, और अचल राज करके साका बांधा.

कितने दिनोंके बअ्द, राजा ने यह अपने दिल में बिचारा कि जिन मुल्कों का नाम मैं सुनता हूं उन की सैर किया चाहिये. यह अपने दिल में ठान, राजगद्दी अपने छोटे भाई भरथरी(३) को सौंप, आप जोगी बन, मुल्क मुल्क की और बन बन की सैर करने लगा.

एक ब्राह्मण उस शहर में तपस्या करता था. एक दिन देवता ने उसे अमृत फल ला दिया. तब उस ने, उस फल को अपने घर में लाकर, ब्राह्मणी से कहा कि जो कोई

(१) शङ्कु. (२) विक्रमादित्य. (३) भर्तृहरि.

इसे खायगा सो अमर होयगा; देवता ने फल देते वक्त यह मुझ से कहा. यह सुनके ब्राह्मणी बज़त सा रोई, और कहने लगी कि यह हमें बड़ा पाप भुगतना पड़ा; क्योंकि अमर होके कब तक भीख मांगेंगे; बल्कि इस से मरना बिहतर है; जो मर जाइये तो संसार के दुख से छूटिये. तब ब्राह्मण बोला कि लेते तो मैं ले आया; पर तेरी बात सुन के मेरी अक्ल खोई गई. अब जो तू बतावे सो मैं करूं. फिर उस से ब्राह्मणी ने कहा यह फल राजा को दो, और इस के बदले लक्खी लो; जिस से स्वारथ औ परमारथ का काम हो.

यह बात सुन, ब्राह्मण राजा के पास गया; और असीस दी. फल का अहवाल बयान करके कहा कि महाराज! यह फल आप लीजिये और मुझे कुछ लक्खी दीजिये. आप के चिरंजीव रहने से मुझे सुख है. राजा ने ब्राह्मण को लाख रुपये दे बिदाकर, महल में आ, जिस रानी को बज़तसा चाहता था, उसे वह फल देकर कहा ऐ रानि! तू इसे खा कि अमर होवेगी और हमेशः जवान रहेगी. रानी ने, इस बातको सुन, राजा से फल ले लिया. राजा बाहर सभा में आया.

उस रानी का आशना एक कोतवाल था; उसने वह फल उसे दिया. इत्तिफ़ाक़न एक बेसवा कोतवाल की दोस्त थी; उसने उसे वह फल देकर उसकी ख़ूबी बयान की. उस बेसवा ने अपने मन में बिचारा कि यह फल राजा के देने जोग है. यह बात अपने मन में ठहरा, वह फल

राजा को जाकर दिया. राजा ने फल लेलिया, और उसे बज़त सा धन दे बिदा किया; और फल को देख, अपने जी में चिन्ताकर संसार से उदास हो, कहने लगा कि इस संसार की माया किसी काम की नहीं; क्योंकि इस से आखिर नरक में पड़ना होता है. तिस से बिहतर यह है, कि तपस्या कीजिये और भगवान की याद में रहिये; कि जिस से आइंदे को भला होवे.

यह बात दिल में ठान, महल में जा रानी से पूछा कि तू ने वह फल क्या किया. उन्ने कहा मैं खागई. तब राजा ने वह फल रानी को दिखाया. वह देखतेही भौचकसी रह गई; और कुछ जवाब न बन आया. फिर, राजा ने बाहर आ, उस फल को धुलवाकर खाया; और राजपाट छोड़, जोगी बन, अकेला, बिन कहे सुने, बन को सिधारा.

विक्रम का राज खाली रहा. जब यह ख़बर राजा इन्द्र को पहुंची तो उसने एक देव धारा नगर की रखवाली को भेजा. वह दिन रात उस शहर की चौकी दिया करता. ग़रज़ इस बातका शुहरः मुल्क बमुल्क हुआ कि राजा भरथरी राज छोड़ निकल गया. यह ख़बर राजा बिक्रम भी सुनतेही तुर्त अपने देस में आया. उस वक्त आधी रात थी; उस समैं नगरी में जाता था कि वह देव पुकारा तू कौन है? और जाता है कहां? खड़ा रह; अपना नाम बता. तब राजा ने कहा मैं हूं राजा बिक्रम; अपने शहर में जाता हूं; तू कौन जो मुझे

रोकता है? तब देव बोला, कि मुझे देवताओं ने इस नगरी की रखवाली को भेजा है; जो तुम सच राजा विक्रम हो तो पहले मुझ से लड़ो, पीछे शहर में जाओ।

इस बात के सुनते ही, राजा ने चरना काछकर उस देव को ललकारा. फिर वह देव भी उनके सनमुख ऊआ. लड़ाई होने लगी. निदान, राजा देवको पछाड़ उस की छाती पर चढ़ बैठा. तब उन ने कहा ऐ राजा! तू ने मुझे पछाड़ा; मैं तुझे जीदान देता हूं. तब तो राजा ने हंसकर कहा तू दीवानः ऊआ है; किस को जीदान देता है; मैं चाहूं तो तुझे मार डालूं; तू मुझे जीदान क्या देगा. तब वह राक्षस बोला कि ऐ राजा! मैं तुझे काल से बचाता हूं; पहले मेरी एक बात सुन; फिर बेपरवा तमाम दुनिया का राज कर. आखिर, राजा ने उसे छोड़ दिया और उस की बात दिल देके सुनने लगा.

फिर देव ने यह उस से कहा कि, इस शहर में चंद्रभान(१) नाम एक राजा बड़ा दाता था. इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ वह जङ्गल को निकल गया तो देखता क्या है कि एक तपस्वी दरख़्त में उलटा लटका ऊआ है, और धूआं पी पीकर रहता है; न किसू से कुछ लेता है, न बात करता है. उसका यह हाल देख, राजा ने अपने घर आ, सभा में बैठकर यह कहा जो कोई इस तपस्वी को लावे वह लाख रुपये पावे. इस बात को सुनकर, एक बेसवा ने राजा के पास आ अर्ज़ यह की, अगर महाराज की आज्ञा

(१) चन्द्रभानु.

पाऊं तो उसी तपस्वी से एक लड़का जनवा, उसी के कांधे पर चढ़ाकर, ले आऊं.

इस बात के सुनने से राजा को अचंभा ऊआ और उस बेसवा को तपस्वी के लाने के वास्ते बीड़ा देकर रुख़सत किया. वह उस बन में गई; और जोगी के मकान पर पहुंच देखती क्या है कि वह जोगी सचही उलटा लटक रहा है; न कुछ खाता न पीता है, और सूख रहा है. ग़रज़, उस बेसवा ने हलवा पका उस तपस्वी के मुंह में दिया. उसे मीठा जो लगा तो वह उसे चाट गया. फिर उस बेसवा ने और लगा दिया. इसी तरह से दो रोज़ तक हलवा चटाया की. उस के खाने से एक कुव्वत उसे ऊई. तब उस ने आंखें खोल, दरख़्त से नीचे उतर, इससे पूछा तू यहां किस काम को आई?

बेसवा ने कहा मैं देवकन्या हूं; स्वर्ग लोक में तपस्या करती थी; अब इस बन में आई हूं. फिर उस तपस्वी ने कहा तुम्हारी मंढ़ी कहां है, हमें दिखाओ. तब वह बेसवा उस तपस्वी को अपनी मंढ़ी में लाकर, षटरस भोजन करवाने लगी तो तपस्वी ने धूआं पीना छोड दिया; और हर रोज़ खाना खाने पानी पीने लगा. निदान काम-देवने उसे सताया. फिर तपस्वी ने उससे भोग किया, योग खोया; और बेसवा को गर्भ रहा. दस महीने में लड़का पैदा ऊआ. जब कई एक महीने का ऊआ, तब उस रण्डी ने तपस्वी से कहा कि गुसाईं जी अब चलकर तीर्थ यात्रा कीजिये; जिससे शरीर के सब पाप कटें.

ऐसी बातें कर उसे भुला, लड़का उस के कांधे पर चढ़ा, राजा की मजलिस को चली कि जहां से वह उस बात का बीड़ा उठाकर आई थी. जिस वक़्त राजा के साम्हने पहुंची, राजा उसको दूरसे पहचान, और लड़के को उस तपस्वी के कांधे पर देख, अहलि मजलिस से कहने लगा, देखो तो यह वही बेसवा है जो जोगी के लेने को गई थी. उन्हों ने अर्ज़ की कि महाराज! सच फ़रमाते हो, यह वही है; और मुलाहज़ः फ़रमाइये कि जो जो बातें हुज़ूर में अर्ज़ कर गई थी, वे सब वक़ूअ में आईं.

ये बातें राजा की और मजलिसियों की जब योगी ने सुनी तो समझा कि राजा ने मेरी तपस्या के डिगाने के लिये यह जतन किया था. योगी यह अपने जी में बिचार कर, वहां से उलटा फिर, शहर के बाहर निकल, उस लड़के को मार डाल, और एक जङ्गल में जा, योग करने लगा. और बअ़द चन्द रोज़ के उस राजा का वाक़िअः हुआ; और योगी ने योग पूरा किया.

ग़रज़ इसका ब्योरा यह है कि तुम तीन आदमी एक नगर में और एक नछत्र, योग, महूरत में पैदा हुए हो. तुम ने राजा के घर में जन्म लिया; दूसरा तेली के हुआ; तीसरा जोगी कुम्हार के घर पैदा हुआ. तुम तो यहां का राज करते हो. और तेली का बेटा पातालके राज का मालिक था; सो उस कुम्हार ने ख़ूब अपना जोग साध, तेलीको मार, मरघट में पिशाच बना, सिरसके दरख़्त में उलटा लटका रक्खा है; और तेरे मारने की फ़िक्र में

है; अगर तू उससे बचेगा तो राज करेगा. इस अहवाल से मैं ने तुझे ख़बरदार किया; तू उससे ग़ाफ़िल मत रहना. इतनी बात कहकर देव तो चला गया. यह अपने महल में दाख़िल हुआ.

जब सुबह हुई तो राजा बाहर निकल बैठा; और दरबारि आम को हुकम किया. जितने छोटे बड़े नौकर चाकर थे, सबने आ आके हुज़ूर में नज़रें दीं. और शादियाने बाजने लगे. सारे शहर को अजब एक तरह की ख़ुशी ख़ुर्रमी हासिल हुई कि जाबजा और घर बघर नाच राग मच गया. फिर राजा धर्मराज करने लगा.

एक दिन का ज़िक्र है कि शान्तशील नामे योगी, एक फल हाथ में लिये, राजा की सभा में आया; और वह फल उसके हाथ में दे, आसन उस जगह बिछाकर बैठा; फिर एक घड़ी के पीछे चलागया. राजा ने, उसके जाने के बअ़द, अपने मन में विचारा कि जिसे देव ने कहा था वही तो नहो. यह गुमान कर फल न खाया, और भण्डारी को बुलाकर दिया कि इसे अच्छी तरह से रखना. पर जोगी हमेशः इसी तरह से आता और एक फल रोज़ दे जाता.

इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ राजा अपने इस्तबल के देखने को गया; और मुसाहिब भी कुछ साथ थे. इतने में जोगी भी वहां पहुंचा, और उसी तरह से फल राजा के हाथ दिया. वह उसे उछालने लगा कि एक बारगी हाथ से ज़मीन पर गिर पड़ा; और बंदर ने उठाकर तोड डाला.

ऐसा एक लअ़ल उस में से निकला कि राजा और उसके मुसाहिब उसकी जोत को देख हैरान हुए. तब राजा ने जोगी से कहा कि तू ने यह लअ़ल मुझे किस वास्ते दिया.

तब उसने कहा ऐ महाराज! शास्त्र में लिखा है कि ख़ालीहाथ इतनी जगह न जाय. राजा, गुरू, जोतिषी, वैद, बेटी के; इस वास्ते, कि यहां फल से फल मिलता है. ऐ राजा! तुम एक लअ़ल को क्या कहते हो, मैं ने जितने फल तुम को दिये हैं, उन सब में रतन है. यह बात सुन, राजा ने भण्डारी से कहा जितने फल तुझे दिये हैं, उन सबको ले आ. भंडारी, राजा की आज्ञा पा, तुरंत ले आया. और उन फलों को जो तुड़वाया तो सब में से एक एक लअ़ल पाया. जब इतने लअ़ल देखे तो राजा निहायत ख़ुश हुआ; और रतनपारखी को बुलवा, लअ़लों को परखवाने लगा; और यों बोला कि साथ कुछ नहीं जायगा; दुनिया में धर्म्म बड़ी चीज़ है; जो कुछ हर एक परबका मोल हो सो धर्म्म से कह दीजिये.

यह बात सुन जौहरी बोला कि महाराज! तुम ने सच फ़रमाया. जिसका धर्म्म रहेगा उसका सब कुछ रहेगा; धर्म्मही साथ जाता है; और वही दोनों जहान में काम आता है. सुनो महाराज! हर एक परब अपने रंग संग ढंग में दुरुस्त है. अगर हर एक का मोल कड़ोड़ कड़ोड़ कहूं, तौभी हो नहीं सकता. फ़िलवाक़िअ़ एक एक इक़लीम एक एक लअ़ल की क़ीमत है. यह सुन राजा बहुत सा खुश हो, जौहरी को ख़िलअ़त दे रुख़सत कर,

योगी का हाथ पकड़, गद्दी पर ले आया; और कहने लगा, मेरा तो सारा मुल्क भी एक लअ़ल का बदा नहीं है. तुम ने दिगंबर होकर जो इतने रतन मेरे तईं दिये हैं, इस का बिचार क्या है, सो तुम मुझ से कहो.

योगी बोला राजा! इतनी बातें ज़ाहिर करनी मुनासिब नहीं. यन्त्र, मन्त्र, औषध, धर्म, घर का अहवाल, हराम का खाना, बुरी बात सुनी हुई; ये सब बातें मजलिस में कही नहीं जातीं; ख़लवत में कहूंगा. सुनो! यह क़ाइदः है, जो बात छः कान में पड़ती है वह मख़फ़ी नहीं रहती; चार कान की बात कोई नहीं सुनता; और दो कान की बात ब्रह्मा भी नहीं जानता; आदमी का तो क्या ज़िक्र है. यह बात सुन, योगी को निराले में ले, राजा पूछने लगा कि गुसाईं जी! तुमने इतने लअ़ल मुझे दिये और एक रोज़ भी भोजन न किया; मैं तुमसे बहुत शरमिंदः हूं; अपना जो मतलब हो सो कहो. योगी बोला राजा! गोदावरी नदी के तीर महाश्मशान में मंत्रसिद्धि करूंगा; उससे अष्टसिद्धि मुझे मिलेगी. सो मैं तुम से भिक्षा मांगता हूं, एक रोज़ तुम मेरे पास रात भर रहना. तुम्हारे पास के रहने से मेरा मंत्र सिद्ध होवेगा. तब राजा ने कहा ख़ूब मैं आऊंगा; तुम वह दिन हमें बता जाओ. योगी बोला भादों बदी चौदस, मंगलवार की सांझ, हथयार बांध, अकेले तुम मेरे पास आना. राजा ने कहा तुम जाओ, मैं मुक़र्रर तनहा आऊंगा.

इस तरह, राजा से बचन ले रुख़सत हो, मठ में जा

तैयार हो, सब सामान ले, वह तो मरघट में जा बैठा. और यहां राजा अपने जी में फ़िक्र करने लगा. इस में वह साइत भी आन पहुंची. तब राजा वहां तलवार बांध, लंगोट कस, अकेला शब को जोगी के पास जा पहुंचा, और उस को आदेस सुनाया. जोगी ने कहा आओ बैठो. फिर राजा वहां बैठ गया तो देखता क्या है कि चारों तरफ़ भूत, प्रेत, डायन तरह बतरह की हौलनाक सूरतें बनाये नाचती हैं; और जोगी बीच में बैठा हो कपाल बजाता है. राजा ने यह अहवाल देख कुछ डर भी न किया; और जोगी से कहा मुझे क्या आज्ञा है. उसने कहा राजा! तुम आये हो तो एक काम करो. यहां से दक्षिण तरफ़ दो कोस पर एक मरघट है; उस में एक सिरस का दरख़त; तिस में एक मुर्दः लटकता है. उसे मेरे पास तुर्त लाओ, कि मैं यहां पूजा करता हूं. राजा को उधर भेज आप आसन मार जप करने लगा.

एक तो, अंधेरी रात की डरावनी थी; दूसरे, मेहकी ऐसी झड़ी लगी हुई, गोया, आज बरस कर फिर कभी न बरसेगा; और भूत पलीद ऐसा शोर गुल करते थे कि सूर बीर भी हो तो देखकर घबरा जाय. लेकिन, राजा अपनी राह चला जाता था. सांप जो आन आन पांव में लिपटते तो उनको मन्त्र पढ़ छुड़ा देता. निदान, जों तों कठिन बाट काट कर, राजा उस मसान में पहुंचा तो देखा कि भूत पकड़ पकड़ आदमियों को दे दे मारते हैं; डायन लड़कों के कलेजे चबाती हैं; शेर दहाड़ते हैं;

हाथी चिंघाड़ मारते हैं. गरज, उस दरख़त को जो ध्यान कर देखा तो जड़से फुनंग तलक हर एक डाल पात उसका दहड़ दहड़ जलता है. और हर चहार तरफ़ से एक गौग़ा बरपा हो रहा है कि मार मार, ले ले, ख़बरदार, जाने न पावे.

राजा उस अहवाल को देख न डरा; लेकिन अपने जी में कहता था, हों न हो, यह वही योगी है, जिसकी बात मुझ से देवने कही थी; और पास जा कर जो देखा तो एक मुर्दः रस्सी से बंधा उलटा लटकता है. मुर्दे को देख, राजा खुश हुआ कि मेरी मिहनत सुफल हुई. खांड़ा फरी ले, उस पेड़ पर निरभै चढ़, एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि रस्सी कट मुर्दः नीचे गिर पड़ा; और गिरते ही, दाढ़ें मार मार रोने लगा. तब राजा, उसकी आवाज़ सुन खुश हो, अपने दिल में कहने लगा भला यह आदमी जीता तो है; फिर उतर कर, उससे पूछा तू कौन है? वह सुनते ही खिलखिलाके हंसा. राजा को इस बात का बड़ा अचंभा हुआ. फिर वह मुर्दः उसी दरख़त पर चढ़कर लटक गया. राजा भी, वोंही चढ़कर, उसे बग़ल में दबा, नीचे ले आया; और कहा चंडाल! तू कौन है? मुझ से कह. उसने कुछ जवाब न दिया. राजा ने सोच कर जीमें कहा शायद यह वही तेली है जो देवने कहा था, कि योगी ने मसान बनाकर रक्खा है. यह बिचार, उसे चादर में बांध, योगी के पास ले चला. जो नर ऐसा साहस करेगा, वह सिद्ध होवेगा.

तब वह बैताल बोला तू कौन है? और कहां लिये जाता है. राजा ने जवाब दिया कि मैं राजा बिक्रम हूं; तुझे योगी पास लिये जाता हूं. उसने कहा एक शर्त से चलता हूं; जो रस्ते में तू बोलेगा तो मैं उलटा फिर आऊंगा. राजा ने उसकी शर्त मानी और ले चला. फिर बैताल बोला ऐ राजा! पंडित, चतुर, बुद्धिमान लोग जो हैं, तिनके दिन तो गीत और शास्त्र के आनन्द में कटते हैं; और कूढ़ मूरखों के दिन कलकल और नींद में. इससे बिहतर यह है कि इतनी राह अच्छी बातों के चर्चे में कट जाय. ऐ राजा! जो मैं कथा कहता हूं उसे सुन.

पहली कहानी.

एक राजा प्रतापमुकट(१) नाम बनारसका था. और उस के बेटे का नाम बजरमुकट.(२) जिसकी नारीका नाम महादेवी. एक दिन कुंवर, अपने दीवान के बेटे को साथ ले, शिकार को गया; और बहुत दूर जंगल में जा निकला; और उस के बीच एक सुंदर तालाब देखा कि उस के कनारे हंस, चकवा, चकवी, बगले, मुर्गाबियां सब के सब कलोल में थे; चारों तरफ़ पुख्तः घाट बने हुए; कंवल तालाब में

(१) प्रतापमुकुट.
(२) वज्रमुकुट.

फूले हुए; कनारों पर तरह बतरह के दरख़्त लगे हुए कि जिन की घनी घनी छांह में ठंढी ठंढी हवा आती थी; और पंछी पखेरू दरख़्तों पर चहचहों में थे; और रंग बरंग के फूल बन में फूल रहे थे; उन पर भौंरों के झुंड के झुंड गूंज रहे; कि ये उस तालाब के कनारे पहुंचे और मुंह हाथ धो कर, ऊपर आये.

वहां एक महादेव का मंदिर था. घोड़ों को बांध, मंदिर के अंदर जा, महादेव का दर्शन कर, बाहर निकले. जितनी देर उन को दर्शन में लगी, उतने अरसे में, किसू राजा की बेटी, सहेलियों का झुंड साथ लिये हुए, उसी तालाब के दूसरे कनारे पर अश्नान करने आई. सो अश्नान, ध्यान, पूजा कर सहेलियों को साथ लिये, दरख़्तों की छांह में टहलने लगी. इधर, दीवान का बेटा बैठा था; और राजा का बेटा फिरता था, कि अचानक उस की और राजा की बेटी की चार नज़रें हुईं. देखते ही उस के रूपको, राजा का बेटा फ़रेफ़्तः हुआ; और अपने दिल में कहने लगा कि ऐ चंडाल काम! मुझ को क्यों सताता है. और उस राजपुत्री ने उस कुंवर को देख, सिर में जो कंवल का फूल पूजा करके रक्खा था, वही फूल हाथ में ले, कान से लगा, दांत से कुतर, पांवतले दिया; फिर उठा छाती से लगा लिया; और सखियोंको साथ ले, सवार हो, अपने मकान को गई.

और यह राजपुत्र, निहायत निराश हो, बिरह में डूबा हुआ, दीवान के लड़के के पास आया; और साथ शर्म के